विश्व हिन्दू परिषद, गुवाहाटी क्षेत्र
(पूर्वोत्तर के सात राज्य)

পূৰ্বোত্তৰ समाधान　　　पूर्वोत्तर समाधान

लोकहितं मम करणीयम

वर्ष–1 अंक–3　　युगाब्द 5120　　चैत्र – ज्येष्ठ 2075　　अप्रैल–जून 2018

शुभकामनाएं

वर्ष प्रतिपदा

श्रीरामनवमी

भगवान महावीर जयंती

श्रीहनुमान जन्मोत्सव

रंगाली बिहू

सीता नवमी

बुद्धपूर्णिमा

हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव

मनोगत

अपना भारत विविधताओं का देश है। विविधताओं में इसका सौन्दर्य है। जैसे एक सुन्दर बागिया में बहुरंगी और नानाविध आकार–प्रकार के पुष्पों से उसका सौंदर्य बढ़ता है वैसे ही विविध मत, पंथ, सम्प्रदाय, भाषा–बोलियाँ, खानपान, वेश–परिधान भारत के सौंदर्य में अभिवृद्धि करते हैं।

इस विशाल भू–भाग वाले देश की इन विशेषताओं में एकता का दर्शन कर उसे स्वीकारने के स्थान पर कभी कभी विभेदों को उभारकर इसकी एकता को खण्डित करने का कुत्सित प्रयास भी कतिपय स्वार्थी तथ्वों द्वारा किया जाता रहा है। किन्तु अनादि काल से हमारे महापुरुषों ने विविधताओं में एकता के सूत्र तलाश कर समाज के सामने रखे, समय समय पर उन्हीं की साधना का मार्गदर्शन किया है।

इतिहास साक्षी है कि कभी जाति, कभी भाषा, कभी पंथ तो कभी प्रांत के नाम पर एक होने का लुभावना नारा देने वालों ने आज तक एकता को पुष्ट करने के स्थान पर उसे कमजोर ही किया है।

तो, हमें समझना होगा कि देश की एकता को परिपुष्ट करने वाले शाश्वत तत्व तीन हैं :–

1. भारत माता　　2. सनातन धर्म　　3. हिन्दू संस्कृति

सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में बांधने वाले इन तत्वों पर हम अगाध श्रद्धा रखकर इनकी साधना करेंगे तभी अपनी एकता–एकात्मता और समरसता अक्षुण्ण रह सकेगी।

– अजय कुमार बोरा

विश्व हिन्दू परिषद – एक परिचय

विश्व हिन्दू परिषद भारत तथा विदेश में रह रहे हिंदुओं की एक सामाजिक, सांस्कृतिक संस्था है, सेवा इसका प्रधान गुण है। इसकी स्थापना हिन्दुओं के पूज्य धर्माचार्यों और संतों के आशीर्वाद तथा विश्व विख्यात दार्शनिकों और विचारकों के परामर्श से हुई है।

स्थापना की पृष्ठभूमि

हिन्दू समाज हजार वर्ष के परतंत्रता काल में अपना स्वत्व, स्वाभिमान, गौरव और महत्व भूल गया। उसने उन सब महान विशेषताओं को अन्धकार में विलीन कर दिया, जिनके बल पर वह विश्वगुरू था।

इसी बीच ईसाई पादरियों द्वारा विदेशी डॉलर के बल पर मध्य प्रदेश में अशिक्षित, निर्धन और सामाजिक दृष्टि से कमजोर वर्गों के धर्मान्तरण के समाचार मिल रहे थे। इस समस्या की वास्तविकता जानने के लिए नियुक्त नियोगी कमीशन की रिपोर्ट 1957 में प्रकाशित होते ही देश में हड़कंप मच गया।

विदेशों में बसे हिन्दुओं की संस्कृति और संस्कारों के संरक्षण की चिंता भी अनेक श्रेष्ठजनों को सता रही थी। त्रिनिदाद से भारत आये एक सांसद डा0 कपिलदेव ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सरसंघचालक श्री गोलवलकर (श्रीगुरू जी) से भेंट करके उन्हें कैराबियाई द्वीप समूह में रह रहे हिन्दुओं पर मंडराते खतरे की बात कही और विदेशस्थ हिन्दुओं से संपर्क स्थापित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

ठन्हीं परिस्थितियों में यह अनुभव किया जाने लगा था कि हिंदू समाज के बीच काम करने वाला एक संगठन खड़ा किया जाए। पूज्य स्वामी चिन्मयानंद जी के मन में भी हिंदुओं का एक विश्वव्यापी संगठन बनाने की इच्छा पनप रही थी। इसी मंथन का परिणाम है विश्व हिन्दू परिषद।

स्थापना

एक हजार वर्ष के निरन्तर संघर्ष से प्राप्त स्वातंत्र्य के पश्चात् यह इच्छा स्वाभाविक थी कि भारत अपनी वैश्विक भूमिका निर्धारित करे। हिन्दू धर्माचार्य यह अनुभव कर रहे थे कि हिन्दू राष्ट्र के रूप में भारत विश्व के समस्त हिन्दुओं के आस्था केन्द्र के रूप में स्थापित हो और विश्व कल्याण के अपने प्रकृति प्रदत्त दायित्व का निर्वाह करे। इस उदात्त लक्ष्य की पूर्ति के लिए पूज्य स्वामी चिन्मयानंदजी (चिन्मय मिशन के संस्थापक) की अध्यक्षता में उन्हीं के मुम्बई स्थित आश्रम ''सांदीपनी साधनालय'' में आयोजित बैठक में मास्टर तारा सिंह, ज्ञानी भूपेन्द्र सिंह (अध्यक्ष–शिरोमणि अकाली दल), डॉ0 के. एम. मुंशी, श्रीगुरू जी (तत्कालीन सरसंघचालक –राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ), स्वामी शंकरानंद सरस्वती, राष्ट्र सन्त तुकड़ो जी महाराज, वी. जी. देशपांडे (तत्कालीन महामंत्री–हिन्दू महासभा) बैरिस्टर एच. जी. आडवाणी, पद्मश्री के. का. शास्त्री, श्रीपाद् शास्त्री किंजवड़ेकर, डॉ0 वी. ए. वणीकर, प्रिंसीपल महाजन, के. जे. सोमय्या, राजपाल पुरी, श्री सूद एवं श्री पोद्दार (नैरोबी), श्रीराम कृपलानी (त्रिनिदाद), धर्मश्री मूलराज खटाऊ, डॉ0 नरसिंहाचारी आदि 40 से भी अधिक सन्तों एवं विचारकों ने चिन्तन किया। इस अवसर पर मास्टर तारा सिंह ने स्पष्ट कहा कि हिन्दू और सिख दो अलग जातियां नहीं हैं। सिखों का उत्थान तभी संभव है, जब तक हिन्दू धर्म जीवित है।

संस्था के नाम ''विश्व हिन्दू परिषद'' की घोषणा भी इन्हीं श्रेष्ठजनों ने विक्रमी संवत 2021 29 अगस्त, 1964 ई0 श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (भगवान श्रीकृष्ण का जन्मदिन) को की।

डा0 के. एम. मुंशी ने परिषद के उद्देश्यों को निम्नलिखित प्रकार से रखा –

हिंदू समाज को सुसंगठित एवं सुदृढ़ बनाने की ओर अग्रसर रहना। 2. आधुनिक युग के अनुकूल समस्त विश्व में हिंदू धर्म के नैतिक एवं आध्यात्मिक सिद्धान्तों तथा अचार–विचार का प्रचार करना। 3. विदेश स्थित समस्त हिंदुओं से सुदृढ संपर्क स्थापित करना तथा उनकी सहायता करना।

संस्था का पंजीकरण एक्ट 1860 के अंतर्गत दिल्ली में 08 जुलाई, 1966 को हुआ (पंजीकरण संख्या एस 3106) और पंजीकृत संविधान में उद्देश्य लिखे गए –

- भारत तथा विदेशस्थ हिंदुओं में भाषा, क्षेत्र, मत, सम्प्रदाय और वर्ग सम्बंधी भेदभाव मिटाकर एकात्मता का अनुभव कराना।
- हिन्दुओं को सुदृढ और अखंड समाज के रूप में खड़ा कर उनमें धर्म और संस्कृति के प्रति भक्ति, गौरव और निष्ठा की भावना उत्पन्न करना।
- हिंदुओं के नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन मूल्यों को सुरक्षा प्रदान कर उनका विकास और विस्तार करना।
- छुआछूत की भावना समाप्त कर हिन्दू समाज में समरसता पैदा करना।
- हिंदू समाज के बहिष्कृत और धर्मान्तरित, पर हिंदू जीवन पद्धति के प्रति लगाव रखने वाले भाई–बहिनों को हिन्दू धर्म में वापस लाकर उनका पुनर्वास करना।
- विश्व के भिन्न–भिन्न देशों में बसे हिंदुओं को धार्मिक एवं सांस्कृतिक आधार पर परस्पर स्नेह के सूत्र में बांधकर उनकी सहायता करना और उन्हें मार्गदर्शन देना।
- संपूर्ण विश्व में मानवता के कल्याण हेतु हिन्दू धर्म के सिद्धांतों और व्यवहार की व्याख्या करना।

हिन्दू की परिभाषा

परिषद के संविधान में 'हिन्दू' की परिभाषा लिखी गई कि :–

"जो व्यक्ति भारत में विकसित हुए जीवन मूल्यों में आस्था रखता है, वह हिंदू है। इससे भी आगे बढ़कर कहा गया कि जो व्यक्ति अपने आपको हिंदू कहता है, वह हिंदू है।"

इस परिभाषा के अंतर्गत वे सब सम्मिलित हो जाते हैं, जो अन्य देशों के नागरिक हैं, पर स्वयं को हिंदू कहते हैं।

घोष वाक्य

हिंदू समाज को गतिशील, सक्रिय और सुधरे रूप में प्रतिष्ठापित करने हेतु घोष वाक्य दिये गये।

'हिन्दवः सोदराः सर्वे, न हिंदु पतितो भवेत्
मम दीक्षा हिंदू रक्षा, मम मंत्र, समानता ।"

हम कैसे सहयोग करें ?

- अपने गांव/बस्ती में साप्ताहिक सत्संग संचालित कर नागरिकों में देव भक्ति, देश भक्ति, अनुशासन एवं संगठन के भाव भर सकते हैं।
- युवकों को बजरंग दल तथा युवतियों को दुर्गावाहिनी से जोड़ सकते हैं।
- आस पास के अभावग्रस्त समाज बांधवों के लिए सेवा कार्य कर सकते हैं।
- विश्व हिन्दू परिषद संगठन के लिए धनराशि एवं संसाधन जुटाने में सहयोग कर सकते हैं।
- गोमाता की रक्षा, पालन एवं संवर्द्धन में सहयोग कर सकते हैं।
- हिन्दू मात्र को मतांतरण के कुचक्र में फँसने से बचा सकते हैं।
- विगत में जो मतांतरित हो गए, उन्हें समझा–बुझाकर स्वधर्म में लौटने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।
- बालक–बालिकाओं को संस्कार वर्गों के माध्यम से धर्म–संस्कृति, आचरण, व्यवहार से युक्त सुयोग्य नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित कर सकते हैं।

25 मार्च सिल्चर, राम महोत्सव में मुख्य वक्ता डा. सुरेन्द्र कुमार जैन

5 मार्च सिल्चर, अधिवक्ता वर्ग की बैठक में श्री मिलिन्द परांडे

16 मार्च गुवाहाटी में आयोजित मातृशक्ति बैठक

7 मार्च गुवाहाटी, हितैषी सभा

धर्म का मर्म

एक साधु शिष्यों के साथ कुम्भ के मेले में भ्रमण कर रहे थे। एक स्थान पर उसने एक बाबा को माला फेरते देखा। लेकिन वह बाबा माला फेरते – फेरते बार–बार आँखें खोलकर देश लेते कि लोगों ने कितना दान दिया है। साधु हँसे व आगे बढ़ गए।

आगे एक पंडित जी भागवत कह रहे थे, पर उनका चेहरा यंत्रवत् था। शब्द भी भावों से कोई संगति नहीं खा रहे थे, चेलों की जमात बैठी थी। उन्हें देखकर भी साधु खिल–खिलाकर हँस पड़े।

थोड़ा आगे बढ़ने पर मण्डली को एक व्यक्ति रोगी की परिचर्या करता मिला। वह उसके घावों को धोकर मरहम पट्टी कर रहा था। साथ ही अपनी मधुर वाणी से उसे बार–बार सांत्वना दे रहा था। साधु कुछ देर उसे देखते रहे, उनकी आँखें छलछला आईं।

आश्रम में लौटते ही शिष्यों ने उनसे पहले दो स्थानों पर हँसने व फिर रोने का कारण पूछा। वे बोले – ''बेटा पहले दो स्थानों पर तो मात्र आडम्बर था पर भगवान की प्राप्ति के लिए एक ही व्यक्ति आकुल दिखा – वह, जो रोगी की परिचर्या कर रहा था। उसकी सेवा भावना देखकर मेरा हृदय द्रवित हो उठा और सोचने लगा न जाने कब जनमानस धर्म के सच्चे स्वरूप को समझेगा ?''

गीत

धर्म के लिए जिएं, समाज के लिए जिएं।
ये धड़कनें श्वांस हो, पुण्य भूमि के लिए, कर्मभूमि के लिए।

गर्व से सभी कहें, हिन्दु हैं हम एक हैं,
जाति पंथ भिन्नता में, स्नेहसूत्र एक हैं।
शुभ्ररंग की छटा, सप्तरंग है लिए ।। 1 ।।

कोटि कोटि कण्ठ से हिन्दु धर्म गर्जना,
नित्यसिद्ध शक्ति से, मातृ भू की अर्चना।
संघशक्ति कलियुगे, सुधा है धर्म के लिए ।। 2 ।।

व्यक्ति व्यक्ति में जगे, समाज भक्ति भावना,
व्यक्ति को समाज से, जोड़ने की साधना।
दाँव पर सभी लगे, जन्मभूमि के लिए ।। 3 ।।

एक दिव्य ज्योति से, असंख्य दीप जल रहे,
कौन लौ बुझा सके, आंधियों मे जो जले।
तेजपुंज हम बढ़ें, तमस चीरते हुए ।। 4 ।।

গৰু বিহুৰ পৰম্পৰা

অসম এখন কৃষি প্ৰধান ৰাজ্য। অতি প্ৰাচীন কালৰ পৰাই অসমৰ মানুহ খেতিৰ ওপৰতে নিৰ্ভৰশীল আছিল। অসম নৈৰে ভৰা ৰাজ্য। বাৰিষা কালত নৈবোৰ পাৰ বাগৰি বয়। ফলত পলস পৰি খেতি পথাৰ সাৰুৱা হৈ পৰে। এই সাৰুৱা মাটিত অলপ কষ্ট কৰি খেতি কৰিলেই বহু শস্য উৎপাদন হয়। হাল বোৱা, মৈ টনা,মৰণা মৰা,শস্যৰ নিৰনিৰ বাবে বিন্ধা টনা, কুঁহিয়াৰ,সৰিয়হ আদি পেৰা, গাড়ী টনা ইত্যাদি কামত অতীজৰ পৰাই অসমৰ মানুহে গৰু ব্যৱহাৰ কৰি আহিছে। তদুপৰি গাই গৰুৱে গাখীৰ দিয়ে। গাখীৰ আটাইতকৈ পুষ্টিকৰ আহাৰ। গৰুৰ গোবৰ আৰু মূত আটাইতকৈ ভাল সাৰ। সেয়েহে গৰুৰ বিষয়ে অসমীয়া ফঁকৰা যোজনাত এইদৰে পোৱা যায়- **"যাৰ নাই গৰু, সি সবাতকৈ সৰু।"**

গৰুৰ নামত জাতীয় উৎসৱ পতা ৰাজ্য হিচাপে হয়তো অসমেই একমাত্ৰ ৰাজ্য। অসমৰ তিনিটা বিহুৰ ভিতৰত ৰঙালী বা ব'হাগ বিহু অন্যতম। ৰঙালী বিহুৰ প্ৰথম দিন অৰ্থাৎ চ'তৰ সংক্ৰান্তিৰ দিনা গৰু বিহু আৰু পাছৰ দিনা মানুহ বিহু। গৰু বিহুৰ প্ৰস্তুতি খেতিয়ক সকলে বহুদিনৰ আগৰ পৰাই কৰে। এই বিহুত গৰুক ন পঘা দিয়াৰ নিয়ম। নতুন পঘাৰ বাবে উদাল গছৰ ছালৰ আঁহ বা মৰাপাটৰ আঁহ গুণ কৰোতে লগত তৰা গছৰ আঁহো দিয়ে। তৰা গছৰ নিশ্চয় ঔষধি গুণ আছে , যি গৰুৰ ৰোগৰ প্ৰতিষেধক ৰূপে কাম কৰে। এই সন্দৰ্ভত অধ্যয়নৰ প্ৰয়োজন।

গৰু বিহুৰ উৰুকাৰ ৰাতি মাটিমাহ আৰু হালধী গৃহস্থই পানীত তিয়াই থয়। পাছদিনা সেইবোৰ ধুই ভাগে ভাগে বটে। বটা মাটি মাহ আৰু হালধীত সৰিয়হৰ তেল দি ভালকৈ মিহলায়। নতুনকৈ কৰা পঘাবোৰ এটা পাত্ৰত হালধি পানীত তিয়াই থয়। গৰু বিহুৰ দিনা নিচেই পুৱাতে গোহালিতে গৰুৰ মূৰত সৰিয়হৰ তেল মিহলোৱা মাহৰ ফোঁট দিয়ে আৰু গাত সৰিয়হৰ তেল সানে। বলধৰ শিঙত তেল সনা পৰম্পৰা প্ৰচলিত। তেল সনাৰ পাছত গোহালিৰ পৰা আটাইবোৰ গৰুক ওলিয়াই খুঁটিত বান্ধে আৰু সৰিয়হৰ তেল মিহলোৱা মাহ আৰু হালধি গৰুৰ গাত ঘঁহে। হালধি,ঠেকেৰা, বেঙেনা, জাতি লাও,আমৰ কলি ইত্যাদি কাটি ডলা বা চালনিৰ ওপৰত আগলি কলাপাতত সজাই ৰাখে। তাৰে কিছু অংশ বাঁহৰ কামিৰে কৰা খৰিকাত সি ছাট তৈয়াৰ কৰে। কাটি থোৱা লাও-বেঙেনাৰ ডলা বা খৰাহি, হালধিত ডুবাই ৰখা নতুন পঘাবোৰৰ সৈতে গৰুক নৈ বা বিললৈ নি গা ধোৱায়। ওচৰত নৈ, বিল নথকা ঠাইৰ মানুহে নাদ বা পুখুৰীৰ পানীৰে গৰুক গা ধোৱায়। ধোওৱাৰ পাছত গৰুৰ গলৰ ৰছি, মুখোৰা, নাকী আদি খুলি এৰি দিয়ে আৰু কটা লাও, বেঙেনা, হালধিৰ টুকুৰা বোৰ গৰুক খোৱাই আৰু গালৈ দলিয়াই গায়-

"লাও খা বেঙেনা খা, বছৰে বছৰে বাঢ়ি যা।
মাৰ সৰু বাপেৰ সৰু, তই হবি বৰ গৰু।"

দীঘলতি আৰু মাখিয়তিৰ পাতেৰে গৰুৰ গাত কোবাই গায়-

'দীঘলতি দীঘল পাত, মাখি মাৰো ঝাত ঝাত।'

লগত লৈ যোৱা নতুন পঘাবোৰ পানীত জুবুৰিয়াই ঘৰলৈ আনে। লাও-বেঙেনাৰ ছাট আনি গোহালিৰ চালত গুজি থয়। বাকী থকা লাও-বেঙেনা বোৰ বাৰীত ছটিয়াই দিয়ে। কোনোৱে মানুহৰ গালৈও দলিয়াই ফূৰ্তি কৰে।

গধূলি ঘৰলৈ ঘূৰি অহাৰ লগে লগে গোহালিত গৰুক নতুন গলৰ ৰছি আৰু মুখুৰা লগায়। ডাঙৰ গৰুৰ নাকত নতুন নাকী লগায়। নতুন পঘাৰে বান্ধে। ধুনা জ্বলাই, খেৰৰ জুইত বিহলঙনীৰ পাত দি যাক দিয়ে। তাৰ পাছত গৰুক ঘিলা পিঠা খোৱাই বিচনীৰে বিচে। গৰুক নিবিচালেকে মানুহে বিচনীৰ বিচনলয়। এই পৰম্পৰা অতীজৰ পৰা চলি আহিছে।?

"ব'হাগ মাথোঁ এটি ঋতু নহয়,
নহয় ব'হাগ এটি মাহ ,
অসমীয়া জাতিৰ আয়ুস ৰেখা...
গণ জীৱনৰ ই সাহ....।"

ড° ভূপেন হাজৰিকা

" দেহি ঐ লিহিৰি দুৰৰি বন
ঢোলে বালে নাচো মই
পেপাঁ বালে নাচো মই
ঐ বিহু মাৰি থাকিবৰ মন...."

"বাপতি সাহেন ৰঙলী বিহু তথা অসমীয়া নতুন বছৰে আপোনালৈ কঢ়িয়াই আনক অফুৰন্ত সুখ, শান্তি আৰু সমৃদ্ধি ....

তাৰেই কামনাৰে যাচিছো আন্তৰিক ওলগ আৰু শুভেচ্ছা".....

पूर्वोत्तर में हिन्दू जागरण

21 जनवरी, 2018 को गुवाहाटी में ''लुइतपरीया हिन्दू समावेश'' में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परम पूजनीय सरसंघचालक जी का उद्‌बोधन हुआ। उत्तर असम (ब्रह्मपुत्र उपत्यका, मेघालय, नागाभूमि) के 4194 स्थानों से 31351 गणवेशधारी स्वयंसेवक तथा 35000 नागरिक उपस्थित हुए। शहर के 14700 परिवारों से 82000 भोजन पैकेट एकत्रित किये गये।

18 दिसम्बर, 2017 को अगरतला, त्रिपुरा में ''हिन्दू मालायमा'' परमपूजनीय मोहनजी भागवत का उद्‌बोधन सुनने के लिए त्रिपुरा राज्य के लगभग 25000 नागरिक उपस्थित हुए। त्रिपुरा के इतिहास में हिन्दू के नाते इतना विशाल एकत्रिकरण प्रथम बार हुआ है।

सिल्चर 25 मार्च, 2018 को राम महोत्सव के अवसर पर गायत्री महायज्ञ एवं धर्म सभा

सिल्चर 24 मार्च, 2018 को राम महोत्सव के अवसर पर विशाल वाहन रैली

हाजो, असम 22 मार्च, 2018 मातृशक्ति की बैठक

हाजो, दुर्गावाहिनी की दैनिक शाखा

প্রেরনা সম্ভার

আচার্য্য রামানুজ দক্ষিণ ভারতের একজন বিদগ্ধ পণ্ডিত হিসাবে সর্বজনবিদিত। মহাপুরুষ শ্রী শ্রীমন্ত শংকরদেবে এবংশ্রীচৈতন্য দেবের সমসাময়িক ছিলেন শিশুকাল থেকেই জাত-পাত, ছুত অচ্যুৎ ইত্যাদি শুনে আসছিলেন। কাবেরী নদীর তীরে আশ্রম সংলগ্ন বাসস্থান, প্রাকৃতিক পরিবেশ মনমুগ্ধ কর। বাড়ীর নিয়মানুযারে প্রতিদিন প্রায় একশত সিড়ি দিয়ে উঠানামা করে স্নান করে পুজা পাঠ করার নিয়ম-নীতি ছিল।

যৌবন বয়সে তিনি একদিন স্নান করে সিড়িবেয়ে উঠিছিলেন, এখন সময় এক হরিজন বৃদ্ধ মহিলা সিড়িতে ঝাড়ু দিতে ছিলেন তাকে দেখে রামানুজ উচ্চশ্বরে বললেন এইযে... তুমি দেখনি আমি উঠি আসছি? তোমার জন্যই আমাক আবার স্নাব করতে হবে। আমি অপবিত্র হয়ে গেলাম। পুনরায় স্নান করে উঠে এসে দেখেন বৃদ্ধা মহিলা ঝাড়ু হাতে দাড়িয়ে আছেন, তাকে দেখে বেগে গিরে বললেন তুমি আবারও দাড়িয়ে আছো? তোমার দর্শনে আমি পুনরায় অপবিত্র হয়ে গেলাম। ভাগো এখান থেকে?

বৃদ্ধা বিনয়ের সুরে বলবেন মহারাজ আমি সময়মত সঠিক ভাবে কাজে আসতে পারিনি তাই ক্ষমা করবেন। আমরা অপবিত্র অস্পৃশ্য। আপনি দেখুন, এই মন্দির কত পবিত্র ভগবানও পবিত্র এই আশ্রম তথা প্রাকৃতিক পরিবেশ তেই পবিত্র নদীও যিনি স্নান করেন তিনিও পবিত্র আপনিও পবিত্র ভগবানেও পবিত্র। চারদিকে পবিত্রতাই পবিত্রতা আমার এই অপবিত্র দেহ নিয়ে কোথায় যাব মহারাজ! একটু বলে দিন না ? এই কথা শুনে রামানুজ চোখ বন্ধ করে কি যেন ভাবলেন। একটু পরেই বৃদ্ধা প্রনাম করে বলেন তোমার মন এত পবিত্র যে তুমি সবাইকে পবিত্র দেখছ, যদিও আমি স্নান করে শরীরকে পবিত্র করেছি কিন্তু আমার মনতো পবিত্র হয়নি। সকলইতো ব্রহ্মের সৃষ্টি সর্বজীবে ব্রহ্মর অবস্থান। তবে আমিকে তুমিই বা কে ? আজ তুমি আমার জ্ঞান চক্ষু খুলে দিয়েছ। আমার অনুরোধ তুমি প্রতিদিন আমাকে দর্শন দিলে আমার মন পবিত্র হতে থাকবে।

বৃদ্ধ বয়সে তিনি স্নান করতে গেলে দুইজন ব্রহ্মানের সহায়তায় সিড়ি বেয়ে নামতেন এবং ওঠার সময় অপৃশ্যদের সহযোগীতায় উঠে আসতেন। এক দিন এক সাধু প্রশ্ন করলেন আরে মহারাজ আপনি নামার সময় ব্রাহ্মন এবং উঠার সময় আস্পশ্যদেব কাধে চড়ে উঠছেন এর কারন কি। তিনি বনলেন দেখুন আমার স্নান করার ফলে শরীর পবিত্র হয়েছে কিন্তু মন যেন কখনও অপবিত্র নাহয় তাই এই ব্যবস্থা।

সভী ধর্মোকো একহীবাত, প্যার বটাও সবকে সাথ
মনুষ্যমে কিঁউ রহে জাতপাত, সাথমে হ্যায়জব প্রভু নাথ।

।। অমৃত বানী ।।

সকলেই চায় শুধু
সর্ব ধর্ম সমন্বয়
তবেকেন এই দেশে
ধর্মান্তকরন হয়
ইসলাম এবং খৃষ্টীয়ান
সমন্বয় কেবল হয়
হিন্দুবই সর্বনাশ।

মিশনারী গন ঘুরে বেড়ায়
কেবল হিন্দু এলাকায়
যায় না কভু ভয়ে তারা
মুসলমান পাড়ায়
সেবার আড়ালে পাহাড়ী দের
ধর্ম পরিবর্তন করায়
সহজ সবল হিন্দুর হৃদয়
কেড়ে নিয়ে যায়
এই ভাবে সৃষ্টি হলো
খৃষ্টীয়ান আলয়
নাগাল্যণ্ড, মিজোরাম আর মেঘালয়।

विनम्र अनुरोध

भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में विगत 45 वर्षों से विश्व हिन्दू परिषद के द्वारा अपने वनवासी समाज बाँधवों के समुत्थान के लिए सेवा कार्य चलाए जा रहे हैं, जिनमें शिक्षा, आरोग्य, स्वावलम्बन, जागरण एवं संगठन की अनेक गतिविधियों के साथ साथ बालक–बालिकाओं के 20 छात्रावास तथा 17 विद्यालय मुख्यतः संचालित हैं। वर्तमान में 64 पूर्णकालीन कार्यकर्ता समर्पित भाव से कार्यरत हैं जिन्हें अत्यल्प मानधन दिया जाता है।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि देश के इस पर्वतीय, दुर्गम तथा संवेदनशील क्षेत्र के निवासी वनवासी समाज के आर्थिक समुत्थान एवं धर्म–संस्कृति–संरक्षण के इस पुनीत कार्य में उदारता से सहयोग देकर हमारा उत्साहवर्द्धन करने की कृपा करें।

आर्थिक सहयोग का स्वरूप

एक छात्र / छात्रा का वार्षिक व्यय	रु 20,000 / –
क्षेत्रीय कार्यालय – भोजनालय का मासिक व्यय	रु 60,000 / –
एक पूर्णकालीन कार्यकर्ता का वार्षिक व्यय	रु 84,000 / –
पांच छात्र / छात्राओं का वार्षिक व्यय	रु 1,00,000 / –
एक छात्रावास का वार्षिक व्यय	रु 4,00,000 / –

बैंक विवरण Bank Detail

Account Name : Uttar Purbanchal Janjati Seva Samiti
Accnount No. : 0568010103638
Name of Bank : United Bank of India
Branch : Silpukuri Branch
IFSC Code : UTBI0SPK385

आयकर अधिनियम की धारा 80-G की छूट प्राप्त है

सुभाषितम्

वतोल्लासितकल्लोल धिक् ते सागरगर्जनम् ।
यस्य तीरे तृषाक्रान्तः प्रान्थः पृच्छति वापिकम् ।।

तेज वायु के चलने के कारण ऊंची ऊंची लहरों से परिपूर्ण और गरजते हुए ओ समुद्र! तुझे धिक्कार है कि तेरे तट पर प्यास से व्याकुल एक पथिक को पूछना पड़ता है कि क्या निकट ही कहीं कोई पीने योग्य जल का तालाब है ?

हमारी विशालता एवं धनाढ्यता किसी जरूरतमंद की सहायता करने से ही सार्थक होती है।

सौजन्य

SWARGEEYA MAHABIR PRASAD JI MITTAL
Mandhania
Poorv Sanghchalak
(Shri Raj Kumar ji Mittal)
Tinsukia (Assam)
M-9435036703

For private circulation only

विश्व हिन्दू परिषद
PANCHAJANYA BHAWAN
Borthakur Mill Road, Ulubari,
Guwahati-781 007 (Assam)
Ph: 0361-2469810, 2469981
E-mail : poorvottarsamadhan@gmail.com
Website : www. Vhp.org

सेवा में,

.....

.....

.....